bdkbZ 33 fganh dFksrj x| % Lo:i vkSj fodkl

bdkbZ dh :ijs[kk

33.0 उद्देश्य
33.1 प्रस्तावना
33.2 निबंध का रचनागत वैशिष्ट्य
33.3 रेखाचित्र का रचनागत वैशिष्ट्य
33.4 संस्मरण का रचनागत वैशिष्ट्य
33.5 यात्रावृत्तांत का रचनागत वैशिष्ट्य
33.6 सारांश
33.7 शब्दावली
33.8 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

33-0 mís';

यह ऐच्छिक पाठ्यक्रम 'हिंदी गद्य' का अंतिम खंड है। इस खंड में आप गद्य की विभिन्न कथेतर विधाओं का अध्ययन करेंगे। इस इकाई में हम आपको निबंध और उसके विभिन्न प्रकार, रेखाचित्र, संस्मरण और यात्रावृत्तांत के स्वरूप और उनके विकास से परिचित कराएँगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- हिंदी कथेतर गद्य विधाओं का रचनागत वैशिष्ट्य बता सकेंगे;
- निबंध के विभिन्न तत्त्वों की विशेषताएँ बता सकेंगे;
- रेखाचित्र, संस्मरण और यात्रावृत्तांत की रचनागत विशिष्टताओं का परिचय दे सकेंगे; और
- हिंदी निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण और यात्रावृत्तांत के विकास का वर्णन कर सकेंगे।

33-1 izLrkouk

ऐच्छिक पाठ्यक्रम-1 से संबंधित यह छठे और अंतिम खंड की पहली इकाई है अर्थात् इस पाठ्यक्रम की यह तैंतीसवीं इकाई है। इस खंड की अगली इकाइयों में आप भारतेंदु हरिश्चंद्र, हजारीप्रसाद द्विवेदी, महादेवी वर्मा, हरिशंकर परसाई, फणीश्वरनाथ रेणु और नागार्जुन की गद्य रचनाओं का अध्ययन करेंगे। इनको पढ़ने से पहले आपके लिए यह जानना जरूरी है कि निबंध, ललित निबंध, व्यंग्य निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण और यात्रावृत्तांत क्या है, उनके विभिन्न तत्त्व कौन-कौन से हैं, उनकी विशेषताएँ क्या हैं? इसके साथ ही हिंदी गद्य विधाओं की परंपरा से परिचित होना भी आपके लिए जरूरी है। हमने इसी पाठ्यक्रम के पहले खंड की दूसरी इकाई में कथात्मक और कथेतर गद्य विधाओं का परिचय दिया था। कथेतर विधाओं के अंतर्गत निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण, जीवनी, आत्मकथा, यात्रावृत्तांत, आलोचना आदि विभिन्न गद्य विधाओं का परिचय दिया था। यहां इन सब गद्य विधाओं का अध्ययन शामिल नहीं किया गया है। सिर्फ़ व्यंग्य निबंध, ललित निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण और यात्रावृत्तांत की संक्षिप्त चर्चा की गयी है।

उपर्युक्त गद्य विधाओं का इतिहास बहुत पुराना नहीं है। साहित्य की ये नयी विधाएं हैं और पत्र-पत्रिकाओं के बढ़ते प्रसार ने इन विधाओं को भी लोकप्रिय बनाने में मदद पहुंचायी है। हिंदी निबंध की शुरुआत उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध से मानी जाती है। भारतेंदु हरिश्चंद्र और उनके समय के कई अन्य महत्त्वपूर्ण लेखकों ने अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए इस विधा का सहारा लिया। भारतेंदु के समय में खड़ी बोली गद्य का निर्माण शुरू हुआ ही था। लेकिन पत्र-पत्रिकाओं की जरूरतों के कारण निबंध विधा ने गद्य के विकास में महत्त्वपूर्ण योग दिया। भारतेंदु युग के बाद आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के संपादन में निकलने वाली पत्रिका 'सरस्वती' ने भी निबंध लेखन में उल्लेखनीय योग दिया। इसी युग में लेखन आरंभ करने वाले निबंधकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी निबंधों को पराकाष्ठा पर पहुंचाया। उनका व्यक्तित्व हिंदी निबंधों के विकास में केंद्रीय महत्त्व रखता है। बाद में तो हिंदी निबंधों का चहुँमुखी विकास हुआ।

इस इकाई में निबंध के स्वरूप का परिचय दिया गया है। लेकिन श्रेष्ठ रचनाएं कभी भी नियमों से पूरी तरह बंधी नहीं होती। शैली और भाषा के स्तर पर निबंधों में लगातार परिवर्तन हुए हैं और उनमें प्रौढ़ता का समावेश हुआ है। भारतेंदु के निबंधों में ज़िंदादिली और व्यंग्यात्मकता

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

के तत्त्व थे, तो रामचंद्र शुक्ल के निबंधों में गहन वैचारिकता और विश्लेषणात्मकता। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने निबंधों की एक नयी शैली का विकास किया जिसे ललित निबंध कहा गया। हरिशंकर परसाई ने भारतेंदु युग के निबंधों में व्यंग्य के प्रयोग को एक नवीन शैली के रूप में विकसित किया। कहने का तात्पर्य यही है कि निबंध के स्वरूप के अध्ययन से हमें निबंधों को समझने में सहायता मिलेगी। निबंधों के अध्ययन में हमें रचनाकारों के व्यक्तिगत वैशिष्ट्य का भी ध्यान रखना होगा। यह अवश्य है कि अगर हम यह समझ जाते हैं कि निबंध क्या है, तो फिर उसके विकासक्रम और उसमें होने वाले नवीन प्रयोगों को समझना भी आसान हो जाता है।

निबंध के अतिरिक्त इस खंड में रेखाचित्र, संस्मरण और यात्रावृत्तांत को भी शामिल किया गया है। रेखाचित्र और संस्मरण हिंदी-साहित्य की नवीन विधाएँ हैं। जब किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, घटना, दृश्य आदि का इस प्रकार वर्णन किया जाता है कि पाठक के मन पर उसका हू-ब-हू चित्र बन जाता है तो उसे रेखाचित्र कहते हैं। इसके विपरीत जब लेखक अपने या किसी अन्य व्यक्ति के जीवन में बीती किसी घटना अथवा दृश्य का स्मरण कर उसका वर्णन करता है तो उसे संस्मरण कहते हैं। हिंदी में रेखाचित्र को एक विधा के तौर पर पराकाष्ठा पर पहुंचाने का श्रेय छायावाद की कवयित्री महादेवी वर्मा को है जिन्होंने रेखाचित्र और संस्मरण दोनों में नवीन प्रयोग भी किये हैं। महादेवी जी का प्रसिद्ध रेखाचित्र 'घीसा' को इस खंड में शामिल किया गया है। इस रेखाचित्र पर मन्नू भंडारी द्वारा टेलीविजन के लिए लिखी पटकथा का अध्ययन खंड 5 में कर चुके हैं। संस्मरण विधा में महादेवी वर्मा के अलावा भी कई लेखकों ने महत्त्वपूर्ण लेखन किया है। इनमें फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा लिखे संस्मरण का उल्लेख भी किया जा सकता है। रेणु ने हिंदी के प्रगतिशील कवि त्रिलोचन शास्त्री पर संस्मरण लिखा है जिसे इस खंड में आप पढेंगे।

जब लेखक अपनी यात्रा के दौरान देखे गये स्थानों का वर्णन करता है तो उसे यात्रावृत्तांत या यात्रा-साहित्य कहते हैं। हिंदी में यात्रावृत्तांत लिखने की समृद्ध परंपरा है। राहुल सांकृत्यायन, अज्ञेय, नागार्जुन, महादेवी वर्मा, यशपाल, मोहन राकेश, असगर वज़ाहत आदि कई लेखकों ने यात्रावृत्तांत लिखे हैं। इस खंड में आप नागार्जुन द्वारा 'सिंध में सत्रह महीने' नामक यात्रावृत्तांत का अध्ययन करेंगे।

33-2 fuc/k dk jpukxr o'k"V;

आपने हिंदी के आधार पाठ्यक्रम के खंड 3 में महादेवी वर्मा का निबंध 'जीने की कला' पढ़ा होगा। उस निबंध को पढ़ने से आपको कुछ अनुमान तो हो गया होगा कि 'निबंध' से क्या तात्पर्य है। 'निबंध' पर विचार करने से पहले आइए, एक बार हम साहित्य की सभी प्रमुख विधाओं से इनकी तुलना करें।

आप इसी पाठ्यक्रम की इकाई 2 से यह तो पहचान ही गये होंगे कि गद्य की प्रमुख विधाएं कौन-सी हैं और उनकी प्रमुख विशेषताएं क्या हैं। गद्य के भीतर कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, यात्रावृत्त, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण आदि कई विधाएं आती हैं। कहानी, उपन्यास और नाटक को हम कथात्मक विधा कह सकते हैं क्योंकि इनमें कोई-न-कोई कहानी होती है। यह कहानी काल्पनिक होती है, यद्यपि यह जीवन यथार्थ से प्रेरित होती है। कथात्मक विधाओं में रचनाकार अपनी बात सीधे न कहकर कथा के माध्यम से कहता है। इसके विपरीत निबंध, यात्रावृत्त, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण आदि गद्य विधाओं को हम कथात्मक विधाओं के अंतर्गत नहीं रख सकते क्योंकि इन विधाओं में लेखक का उद्देश्य कथा कहना नहीं होता। जीवनी में किसी अन्य व्यक्ति का जीवन चरित्र केंद्र में होता है। गद्य आत्मकथा में लेखक अपने जीवन के बारे में लिखता है। संस्मरण में लेखक अपनी स्मृतियों को प्रस्तुत करता है। ये स्मृतियाँ किसी व्यक्ति, स्थान या घटना के बारे में हो सकती हैं। रेखाचित्र में लेखक अपने संपर्क में आए किसी व्यक्ति के जीवन चरित्र का खाका प्रस्तुत करता है। यहां घटनाएं नहीं व्यक्ति की चारित्रिक विशिष्टता प्रमुख होती है। यात्रावृत्त में लेखक किसी स्थान विशेष की यात्रा का लेखा-जोखा पेश करता है। इन सभी विधाओं की तुलना में निबंध को रखकर देखें।

निबंध कथात्मक विधा नहीं है क्योंकि उसकी रचना का आधार कथा नहीं है। निबंध में लेखक अपना या दूसरे का जीवन-चरित्र प्रस्तुत नहीं करता, इसलिए वह जीवनी और आत्मकथा से भिन्न है। इसी दृष्टि से वह रेखाचित्र और यात्रावृत्त से भी अलग है। तब, प्रश्न यह है कि निबंध क्या है?

निबंध का सैद्धांतिक विवेचन करने से पहले आइए, हम उसे सीधे-सादे ढंग से समझने की कोशिश करें। इस खंड में जो निबंध आप पढ़ने जा रहे हैं उन्हें ध्यान में रखिए। संभव हो तो

उन्हें पढ़ जाइए। आप पाएंगे कि इनमें कुछ ऐसी विशेषताएं हैं जिनके कारण उन्हें 'निबंध' की संज्ञा दी गयी है। ये सभी निबंध 'गद्य' में है। इसलिए **'x|kRedrk'** को हम निबंध की पहली विशेषता कह सकते हैं। लेकिन 'गद्य' में लिखे जाने मात्र से कोई रचना निबंध नहीं हो जाती। आइए, हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखित 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' निबंध के निम्नलिखित अंश को ध्यान से पढ़ें:

मानव शरीर का अध्ययन करने वाले प्राणि-विज्ञानियों का निश्चित मत है कि मानव-चित्त की भांति मानव-शरीर में भी बहुत-सी अभ्यास जन्य सहज वृत्तियाँ रह गयी हैं। दीर्घकाल तक उनकी आवश्यकता रही है। अतएव शरीर ने अपने भीतर एक ऐसा गुण पैदा कर लिया है कि वे वृत्तियाँ अनायास ही, और शरीर के अनजान में भी, अपने-आप काम करती है। नाखून का बढ़ना उसमें से एक है, केश का बढ़ना दूसरा है, दांत का दुबारा उठना तीसरा है, पलकों का गिरना चौथा है।

'नाखून क्यों बढ़ते हैं' निबंध के इस अंश में मानव शरीर की सहज वृत्तियों के बारे में द्विवेदी जी ने अपने विचार प्रस्तुत किये हैं। इस अंश में विचार की प्रधानता है और प्रत्येक निबंध में विचार किसी न किसी रूप में अवश्य मौजूद रहता है। लेकिन अब इसी निबंध के दूसरे अंश को देखें:

मनुष्य को सुख कैसे मिलेगा? बड़े-बड़े नेता कहते हैं, वस्तुओं की कमी है, और मशीन बैठाओ, और उत्पादन बढ़ाओ, और धन की वृद्धि करो और बाह्य उपकरणों की ताकत बढ़ाओ। एक बूढ़ा था। उसने कहा था-बाहर नहीं, भीतर की ओर देखो। हिंसा को मन से दूर करो, मिथ्या को हटाओ। क्रोध और द्वेष को दूर करो, लोक के लिए कष्ट सहो, आराम की बात मत सोचो, प्रेम की बात सोचो, आत्म-तोषण की बात सोचो, काम करने की बात सोचो। उसने कहा- प्रेम ही बड़ी चीज है, क्योंकि वह हमारे भीतर है।

उपर्युक्त अंश में भी विचार है, लेकिन यहां विचार से ज्यादा भावों की प्रधानता है। बिना भावों के निबंध शुष्क हो जाते हैं। इसलिए प्रत्येक निबंध में विचारों और भावों की अभिव्यक्ति जरूर होती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि निबंध की दूसरी विशेषता **fopkjksa vkSj Hkkoksa dh vfHkO;fDr** है।

आप जानते हैं कि लेख में भी लेखक अपने विचारों को प्रस्तुत करता है। तब क्या इतिहास, समाजशास्त्र या विज्ञान के किसी पक्ष पर लिखा गया लेख भी निबंध की श्रेणी में गिना जा सकता है? लेख में मुख्य उद्देश्य विषय का सुविचारित प्रतिपादन करना होता है। इसमें विषय का वस्तुपरक विवेचन होना आवश्यक है। लेकिन निबंध में वस्तुपरकता अनिवार्य गुण नहीं है। लेखक अपने विचारों और भावों को इस तरह पेश करता है कि उस प्रस्तुति में उसके लेखकीय व्यक्तित्व का स्पष्ट प्रभाव दिखायी देता है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि निबंध में विषय की प्रस्तुति आत्मपरक होती है लेकिन विषय का विश्लेषण वस्तुपरक हो सकता है। शुक्लजी के 'क्रोध', 'लज्जा और ग्लानि', आदि निबंध इसी श्रेणी में आते हैं। इस प्रकार निबंध की तीसरी विशेषता है, **ys[kdh; O;fDrRo dk izHkko**।

लेखकीय व्यक्तित्व का प्रभाव निबंध को एक स्वतंत्र विधा के रूप में स्थापित करने का मुख्य आधार कहा जा सकता है। लेकिन एक और विशेषता है जो निबंध को साहित्यिक विधा के रूप में प्रतिष्ठित करती है। वह है उसका अभिव्यंजना पक्ष। निबंध में भावों और विचारों का प्रस्तुतीकरण जिस शैली में रचनाकार करता है, उसके लिए जैसी उत्कृष्ट भाषा प्रयुक्त करता है, वे ही उस निबंध की महत्ता का आधार बनते हैं। गद्य का प्रयोग तो सामान्य लेखन में प्रायः होता ही है, लेकिन निबंध में भाषा और शैली की नवीनता, उत्कृष्टता, प्रौढ़ता और लालित्य (सुंदरता) विचारों और भावों को नया आलोक प्रदान करते हैं। हम केवल भाव और विचार से ही प्रभावित नहीं होते। बल्कि अभिव्यक्ति का ढंग भी हमें आकृष्ट करता है। इस प्रकार निबंध का **vfHkO;atuk i{k** उसे सामान्य लेखों से अलग करता है। इसे निबंध की चौथी विशेषता कह सकते हैं।

fuca/k ds Hksn

ऊपर के विश्लेषण से स्पष्ट है कि निबंध में कुछ तत्त्व ऐसे होते हैं जो प्रायः सभी निबंधों में मिलेंगे। किंतु ये सभी निबंधों में समान रूप से नहीं होते। कोई निबंध विचार प्रधान हो सकता है, तो, कोई भाव प्रधान। किसी में विषय का वर्णन मात्र हो सकता है, तो किसी में गहन विश्लेषण। किसी में भाषा सहज और सरल हो सकती है तो किसी में जटिल। कहने का तात्पर्य

यह है कि निबंध के उपर्युक्त चारों तत्त्व कई रूपों में मिल सकते हैं। तत्त्वों के इन्हीं विभिन्न रूपों के आधार पर निबंधों के कई वर्गीकरण किये जा सकते हैं। आगे हम निबंधों के इन वर्गीकरणों का अध्ययन करेंगे।

विषयवस्तु के आधार पर निबंध के दो भेद किये जा सकते हैं। जिस निबंध में विचारों या चिंतन की प्रधानता होती है, उन्हें विचारात्मक या चिंतनप्रधान निबंध कह सकते हैं। लेकिन जिसमें भावों की प्रधानता होती है, उन्हें भावप्रधान निबंध कहते हैं। भारतेंदु हरिश्चंद्र का निबंध 'स्वर्ग में विचारसभा का अधिवेशन' और हजारी प्रसाद द्विवेदी का निबंध 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' में विचारों की प्रधानता है लेकिन इन निबंधों में शुक्लजी की तुलना में विचारों के वस्तुपरक विश्लेषण की बजाए भावपरक विश्लेषण अधिक दिखायी देता है।

लेखकीय व्यक्तित्व के आधार पर भी निबंध के भेद किये जा सकते हैं। वैसे तो सभी निबंधों में लेखकीय व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति होती है, लेकिन विचारप्रधान और वस्तुपरक निबंध में यह प्रभाव सबसे कम होता है और भावात्मक निबंध में लेखक के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति की संभावनाएं अपेक्षाकृत अधिक होती है। जिन निबंधों में लेखकीय व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति प्रत्यक्ष और अधिक होती है उन्हें आत्मपरक निबंध कह सकते हैं और जिन निबंधों में व्यक्तित्व का प्रभाव कम और परोक्ष होता है, उन्हें वस्तुपरक निबंध कहते हैं।

शैली के आधार पर भी निबंध के भेद किये जा सकते हैं। शैली का तात्पर्य है निबंध किस रूप में लिखा गया है। अपने व्यापक अर्थ में ऊपर बताये गये भेद भी शैली के अंतर्गत ही आयेंगे। यहां हम निबंध की रचना पद्धति के आधार पर कुछ अन्य भेदों की चर्चा कर रहे हैं। निबंध की विषयवस्तु की प्रस्तुति के आधार पर दो भेद किये जा सकते हैं, वर्णनात्मक निबंध और विश्लेषणात्मक निबंध। जब निबंध में विषयवस्तु का सीधे-सीधे वर्णन प्रस्तुत किया जाता है और उसकी व्याख्या नहीं की जाती तब उसे वर्णनात्मक निबंध कहते हैं। जब निबंधकार विषयवस्तु की गहन व्याख्या और विश्लेषण प्रस्तुत करता है तो ऐसे निबंध की शैली को विश्लेषणात्मक शैली कहा जाता है। इस तरह के निबंधों में लेखक विषयवस्तु के चिंतन पक्ष पर अपना ध्यान केंद्रित करता है। उसके विभिन्न पक्षों की व्याख्या करता है, उनको ठोस तर्कों और उदाहरणों से स्थापित करता है। ऐसे निबंधों से लेखक की वैचारिक क्षमता का पता चलता है। निबंधों में वर्णन और विश्लेषण के लिए दो शैलियां अपनायी जाती हैं : समास शैली और व्यास शैली।

समास शैली में लेखक के विचार एक के बाद एक प्रस्तुत होते रहते हैं, उनमें व्याख्या नहीं होती। इस शैली में लेखक अपने विचारों को विस्तार नहीं देता बल्कि उन्हें संक्षेप में और सूत्र रूप में प्रस्तुत करता है। इसके विपरीत व्यास शैली में लेखक अपने विचारों को खोलकर रखता चलता है। अपना मत व्यक्त करते हुए उसकी व्याख्या भी करता चलता है।

शैली की दृष्टि से निबंधों का एक वर्गीकरण और किया जा सकता है। जब लेखक कथ्य में अंतर्निहित सौंदर्य को उभारना चाहता है तो उसे ललित निबंध कहते हैं और जब कथ्य में अंतर्निहित व्यंग्य को उभारना चाहता है तो उसे व्यंग्य निबंध कहते हैं। निबंध में लालित्य लाने के लिए लेखक कई तरीके अपनाता है। पहली बात तो यह कि लेखक में व्यापक मानवीय रुचि उत्पन्न करने की क्षमता होनी चाहिए। वह विषय को इस रूप में प्रस्तुत करें कि सभी के हृदय को छुए। दूसरे, उसमें अपने विचारों को मौलिक और प्रभावशाली रूप में रखने की सामर्थ्य होनी चाहिए। तीसरे, वह विषय को इस रूप में प्रस्तुत करे कि उससे उसकी आत्मीयता और खुलेपन का एहसास हो। चौथे, उसमें विनोद की प्रवृत्ति भी होनी चाहिए ताकि उसका निबंध बोझिल न हो और अंत में, उसमें अपनी विचार और भावयात्रा में पाठक को भी सक्रिय रूप से शामिल करने की क्षमता होनी चाहिए।

भावप्रधान निबंधों में ललित शैली अपनायी जाती हैं। व्यंग्य निबंध में लेखक का उद्देश्य व्यंग्य को उभारना होता है। इसलिए विषय से लेकर भाषा तक निबंध के प्रत्येक पक्ष को वह इस रूप में प्रस्तुत करता है कि उससे कथ्य में निहित अंतर्विरोधी (परस्पर विरोधी) सत्य उभरते हैं। कथ्य में निहित इसी अंतर्विरोध में व्यंग्य समाहित होता है जो पाठक को आकृष्ट करता है। हिंदी में भारतेंदु युग के लेखकों और बाद में नयी कहानी दौर में हरिशंकर परसाईं, शरद जोशी, रवींद्रनाथ त्यागी आदि के निबंधों में व्यंग्य की इस क्षमता को देख सकते हैं। शैली की दृष्टि से इस बात को ध्यान में रखा जाना चाहिए कि लेखक एक ही निबंध में एक से अधिक शैलियों का प्रयोग कर सकता है।

निबंधों का विभाजन उसमें प्रयुक्त होने वाली भाषा के आधार पर भी किया जा सकता है। निबंध में भाषा के कई रूप हो सकते हैं। निबंध की भाषा तीन बातों पर निर्भर करती है: विषय, लेखक और शैली। निबंध की भाषा विषय से भी तय होती है, लेखक के निजी वैशिष्ट्य से भी और उस शैली से भी जो विषयवस्तु को प्रस्तुत करने के लिए लेखक ने अपनायी है। निबंध की भाषा संस्कृतनिष्ठ, तत्सम शब्दों वाली हो सकती है, बोलचाल की भाषा में भी हो सकती है और उर्दूनिष्ठ भी हो सकती है। भाषा में लंबे और जटिल वाक्य हो सकते हैं तथा छोटे और सरल वाक्य भी हो सकते हैं। उसमें लोकभाषा का लालित्य भी हो सकता है और पांडित्य का प्रदर्शन भी। कहने का तात्पर्य यही है कि भाषा के कई रूप हो सकते हैं। लेकिन जो भी रूप हो वह निबंध के प्रभाव, सौंदर्य और संप्रेषणीयता को बढ़ाने वाला हो।

निबंध के उपर्युक्त वर्गीकरण के बारे में यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि यह वर्गीकरण अंतिम नहीं है और सभी निबंधों पर ये पूरी तरह से लागू नहीं किये जा सकते। लेकिन ऊपर जो भेद गिनाये गये हैं, उनके आधार पर निबंधों की भिन्न-भिन्न विशेषताओं को पहचानने और समझने में आपको मदद मिलेगी।

ck/k i:'u

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए और अपने उत्तर को इकाई के अंत में दिये गये उत्तर से मिलाइए।

1. निम्नलिखित में से कौन-सी विशेषता निबंध पर लागू नहीं होती।
   क) निबंध गद्य में लिखा जाता है।
   ख) निबंध के केंद्र में कहानी होती है।
   ग) निबंध में लेखकीय व्यक्तित्व का प्रभाव देखा जा सकता है।
   घ) निबंध में विचारों और भावों की अभिव्यक्ति होती है। ( )
2. नीचे निबंध की विभिन्न विशेषताओं का उल्लेख किया गया है। उनके आधार पर बताइए कि ये विशेषताएं किस प्रकार के निबंधों में पायी जाती हैं।
   mnkgj.k % जिस निबंध में विचार की प्रधानता होती है।
   mÙkj % विचारात्मक निबंध
   क) ऐसे निबंध जिनमें रचनाकार का व्यक्तित्व प्रत्यक्ष और अधिक अभिव्यक्त होता है।
   .....
   ख) जिनमें विषयवस्तु की गहन व्याख्या होती है।
   .....
   ग) जिनमें लेखक अपने विचारों को विस्तार नहीं देता बल्कि उन्हें संक्षेप में और सूत्र रूप में प्रस्तुत करता है।
   .....
   घ) जिनमें कथ्य में निहित सौंदर्य को उभारने को प्राथमिकता दी जाती है।
   .....
   ङ) जहां पाठक की भावनाओं को आंदोलित किया जाता है।
   .....
3. निम्नलिखित आधारों पर निबंध के दो-दो भेद बताइए।
   क) विषयवस्तु के आधार पर
   .....
   .....
   ख) लेखकीय व्यक्तित्व के आधार पर
   .....
   .....
   ग) शैली के आधार पर
   .....
   .....

4. ललित निबंध की कोई दो विशेषताएं लिखिए।

....

....

....

5. समास शैली और व्यास शैली का अंतर चार पंक्तियों में स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

....

6. निबंध में भाषा किन आधारों पर तय होती है? किन्हीं दो आधारों को बताइए।

....

....

....

vH;kl

1. लेख और निबंध का अंतर स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

33-3 js[kkfp= dk jpukxr oSf'k"V;

रेखाचित्र गद्य साहित्य की नवीन विधा है और जैसाकि नाम से स्पष्ट है यह नाम चित्रकला से लिया गया है। चित्रकला में चित्र बनाने के कई ढंग होते हैं। केवल रेखाओं से चित्र बनाना और रेखाओं और रंगों दोनों से चित्र बनाना और केवल रंगों से चित्र बनाना। जब रेखाओं और रंगों दोनों का इस्तेमाल किया जाता है तो चित्र अपनी पूर्णता में उभरकर आता है लेकिन जब रेखाओं से चित्र बनाया जाता है और उनमें रंग नहीं भरा जाता, तो सिर्फ बाहरी आकृति उभरती है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि रेखाचित्र से बना चित्र अधूरा होता है। इसके विपरीत रेखाचित्र से भी आकृति को न सिर्फ पहचाना जा सकता है बल्कि उसमें विशेष भावों की भी अभिव्यक्ति की जा सकती है। जब किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, घटना, दृश्य आदि का न्यूनतम शब्दों से इस प्रकार वर्णन किया जाता है कि पाठक के मन पर उसका हू-ब-हू चित्र बन जाता है तो उसे रेखाचित्र कहते हैं। इस प्रकार के वर्णन का तटस्थ होना आवश्यक है। रेखाचित्र में विस्तार से और हर पक्ष का वर्णन करने की आवश्यकता नहीं होती। लेकिन जिस पक्ष का भी वर्णन किया जाए उससे पाठक के सामने एक स्पष्ट तस्वीर उभरनी चाहिए। रेखाचित्र में लेखक का वर्णित घटना, व्यक्ति आदि के साथ निजी संबंध होना आवश्यक नहीं है। रेखाचित्र अतीत का भी हो सकता है, वर्तमान का भी और यदि लेखक के मन में भविष्य का कोई चित्र है तो उसका भी हो सकता है। रेखाचित्र में लेखक यथार्थ का सहारा लेता है लेकिन वह उन्हें परिपूर्ण बनाने के लिए कल्पना का सहारा भी लेता है। रेखाचित्र में लेखक के निजी व्यक्तित्व का कोई महत्त्व नहीं होता। वह अपेक्षाकृत तटस्थ और वस्तुपरक होकर रेखाचित्र की रचना करता है।

कम से कम शब्दों का उपयोग कर बात रखने की कला का रेखाचित्र में विशेष महत्त्व है। अनावश्यक विस्तार रेखाचित्र को भोंडा बना देता है। रेखाचित्र में वर्णन इतना सुगठित और प्रभावपूर्ण होना चाहिए कि उसका चित्र पाठक के सामने उपस्थित हो जाए। ऐसा लगे कि किसी चित्रकार का बनाया हुआ चित्र आँखों के सामने है। शब्दों के द्वारा चित्र अंकित करने के इस गुण को चित्रात्मकता कहते हैं। यह रेखाचित्र की बहुत बड़ी विशेषता है। वास्तव में रेखाचित्रकार का काम शब्दों के द्वारा चित्रों की श्रृंखला प्रस्तुत करना है।

रेखाचित्र की रचना कहानी की तरह होती है। लेकिन कहानी से भिन्न इस रूप में कि रेखाचित्र में लेखक स्वयं उपस्थित रहता है। कहानी की तरह रेखाचित्र काल्पनिक नहीं होता। उसके पात्र भी कभी-न-कभी लेखक के संपर्क में जरूर आये होते हैं। लेखक संस्मरण की तरह अपने पात्रों, स्थितियों और प्रसंगों का वर्णन करता है। वह स्वयं भले ही उसका पात्र न हो, लेकिन

उसकी मौजूदगी रचना को प्रामाणिक और विश्वसनीय बनाती है। वह ऐसे जीवन चरित्रों को हमारे सामने लाता है जो अपनी साधारणता में भी असाधारण होते हैं। उनके जीवन के मार्मिक प्रसंग, उनका दृढ़ चरित्र, कठिन और विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए भी आत्मबल बनाये रखना, उनकी करुणा और उनके हृदय का आंतरिक आलोक ही रेखाचित्र की शक्ति होते हैं।

हिंदी में महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों के संग्रह 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ', 'पथ के साथी' आदि का विशेष महत्त्व है। इनके अतिरिक्त बनारसीदास चतुर्वेदी का 'सेतुबंध', श्रीराम शर्मा का 'प्राणों का सौदा', रामवृक्ष बेनीपुरी का 'माटी की मूरतें' तथा 'मील का पत्थर' उल्लेखनीय रेखाचित्र हैं। महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों को लेकर विद्वानों के बीच कुछ मतभेद हैं। कुछ विद्वान् इन्हें संस्मरण कहने के पक्ष में हैं। उनका तर्क है कि महादेवी वर्मा ने जिन पात्रों और घटनाओं को लिया है, वे उनके जीवन में आये हुए वास्तविक पात्र और घटनाएँ हैं। लेकिन महादेवी वर्मा ने जिस तटस्थता के साथ, संक्षिप्त रूप में, पात्रों और घटनाओं का चित्रात्मक अंकन किया है, वह उनकी रचनाओं को रेखाचित्र के समीप लाता है। वस्तुतः महादेवी के रेखाचित्रों में 'स्मृतिचित्र' तथा संस्मरण दोनों समाहित हो जाते हैं। महादेवी ने संस्मरणात्मक शैली में ही रेखाचित्र अधिक लिखे हैं जिनको बहुत से आलोचक संस्मरण मानना अधिक उपयुक्त समझते हैं।

महादेवी वर्मा का रेखाचित्र 'घीसा' को आपके पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। इस रेखाचित्र के आधार पर टेलीविजन के लिए लिखी पटकथा को भी इस पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। इस पटकथा को मन्नू भंडारी ने लिखा था। 'घीसा' पर लिखी पटकथा का अध्ययन आप खंड 4 में कर चुके हैं।

33-4 laLej.k dk jpukxr oSf'k"V;

रेखाचित्र की तरह संस्मरण भी हिंदी-साहित्य की नवीन विधा है। संस्मरण अपनी प्रकृति में रेखाचित्र के सर्वाधिक नजदीक है। लेकिन इसमें आत्मकथा और जीवनी के तत्व भी समाहित होते हैं। जब लेखक अपने या किसी अन्य व्यक्ति के जीवन में बीती किसी घटना अथवा दृश्य का स्मरण कर उसका वर्णन करता है तो उसे संस्मरण कहते हैं। संस्मरण में उसका स्मृति के आधार पर लिखा जाना आवश्यक है। संस्मरण लिखने के लिए यह जरूरी है कि लेखक का वर्णित व्यक्ति, घटना आदि के साथ व्यक्तिगत संबंध रहा हो। संस्मरण अतीत का ही हो सकता है, वर्तमान या भविष्य का नहीं। संस्मरण में लेखक उन्हीं तथ्यों का वर्णन करता है जो वास्तव में घटित हो चुके हैं। उसे अपनी कल्पना से कुछ भी जोड़ने की छूट नहीं है।

संस्मरण का संबंध अतीत से होते हुए भी वर्तमान उसमें अनुपस्थित नहीं होता। लेखक संस्मरण लिखने के लिए तभी प्रेरित होता है जब वह वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता और उपादेयता देखता है। क्योंकि संस्मरण के लिए उसे अतीत के अपने विशाल भंडार में से व्यक्तियों और प्रसंगों का चुनाव करना होता है। अतीत में जो कुछ घटित हुआ होता है, वह सब संस्मरण का हिस्सा नहीं बनता। अतीत के वे ही चरित्र और प्रसंग जिनकी वर्तमान के लिए प्रासंगिकता होती हैं उसे ही लेखक संस्मरण का हिस्सा बनाता है।

संस्मरण में लेखक के निजी विचार किसी-न-किसी प्रकार आ ही जाते हैं, क्योंकि उसका संबंध उसके अपने जीवन से भी होता है। विस्तार संस्मरण की विशेषता है। प्रसंगों को याद करते समय लेखक उन्हें रुचिकर बनाकर प्रस्तुत करता है और कहानी कहने के लहजे का उपयोग करता है। इससे वर्णन में फैलाव आता है। संस्मरण कभी जीवनी के निकट चला आता है, कभी आत्मकथा के। यदि लेखक अपने व्यक्तिगत जीवन की घटनाओं को याद करता है तो वह 'आत्मकथा' के निकट आ जाता है और यदि अन्य व्यक्ति के साथ घटी घटनाओं को याद करता है तो वह 'जीवनी' के निकट पहुँच जाता है। मुख्य बात यह है कि इसमें लेखक या किसी अन्य व्यक्ति के जीवन का कोई पक्ष सामने अवश्य आता है। इसके साथ, सबसे बड़ी बात यह है कि वह वर्णन इस प्रकार करता है, मानो बीती घटनाओं को याद कर रहा हो।

हिंदी में राहुल सांकृत्यायन की 'बचपन की स्मृतियाँ', प्रकाशचन्द्र गुप्त की 'पुरानी स्मृतियाँ', विनयमोहन शर्मा की 'रेखा और रंग', कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर की 'जिन्दगी मुस्कराई', शान्तिप्रिय द्विवेदी की 'स्मृतियाँ और कृतियाँ', विष्णु प्रभाकर की 'कुछ शब्दः कुछ रेखाएँ' और महादेवी वर्मा के लिखे 'पथ के साथी' और 'मेरा परिवार' उल्लेखनीय संस्मरण हैं।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

ck/k iz'u

7. निम्नलिखित में से कौन सी विशेषता रेखाचित्र पर लागू नहीं होती।
   क) कम से कम शब्दों का उपयोग करना।
   ख) रेखाचित्र अतीत, वर्तमान और भविष्य का भी हो सकता है।
   ग) रेखाचित्र कल्पना के आधार पर लिखा जाता है।
   घ) रेखाचित्र में अनावश्यक विस्तार से बचा जाता है। ( )
8. निम्नलिखित में से कौन सी विशेषता संस्मरण पर लागू नहीं होती।
   क) संस्मरण स्मृतियों के आधार पर लिखा जाता है।
   ख) संस्मरण का संबंध अतीत से होता है।
   ग) संस्मरण में आत्मकथात्मक तत्व भी होते हैं।
   घ) संस्मरण का कथात्मक होना जरूरी है। ( )

vH;kl

2. रेखाचित्र और संस्मरण के दो अंतर बताइए।

   ....

   ....

3. निबंध को गद्य की कसौटी क्यों कहा जाता है?

   ....

   ....

   ....

33-5 ;k=kòÙkkar dk jpukxr oSf'k"V;

जब लेखक अपनी यात्रा के दौरान देखे गये स्थानों का वर्णन करता है तो उसे यात्रावृत्तांत या यात्रा-साहित्य कहते हैं। लेखक वर्ण्य-विषय का वर्णन आत्मीयता तथा निजता के साथ करता है, जिस विषय का वह वर्णन करता है उसके साथ उसका जुड़ाव होता है तथा उसके अपने जीवन-संदर्भ भी उसमें आते हैं। आत्मीयता तथा निजता का यह गुण निबंध-शैली की भी विशेषता है, इसलिए यह कहा जा सकता है कि यात्रावृत्त की वर्णन-प्रक्रिया निबंध की सी होती है। फिर भी यात्रावृत्त निबंध नहीं है, क्योंकि इसमें किसी भी विषय का समावेश नहीं हो सकता। इसमें तो यात्रा के दौरान लेखक जो कुछ भी देखता और अनुभव करता है, उसे ही यात्रावृत्तांत में लिखता है।

यात्रावृत्त के लेखक अपनी यात्रा के दौरान जो कुछ देखता और महसूस करता है, उसे प्रायः स्मृति के आधार पर लिखता है, इसलिए किसी अच्छे यात्रावृत्त में संस्मरण की प्रवृत्ति भी रहती है। फिर भी, यात्रावृत्त और संस्मरण एक-दूसरे से भिन्न है। यात्रावृत्त में समय तथा स्थान का उल्लेख अनिवार्य रूप से होता है, लेकिन संस्मरण में स्थान तथा समय का उल्लेख अनिवार्य नहीं है। इसके अतिरिक्त यात्रावृत्त में यात्रा के दौरान देखे गये स्थानों, दृश्यों अथवा घटनाओं से जुड़ी सामयिक स्मृतियों का वर्णन होता है, जबकि संस्मरण में स्थायी और अमिट स्मृतियों का वर्णन किया जाता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि वर्णन की दृष्टि से यात्रावृत्त निबंध और संस्मरण दोनों के कुछ गुणों को लेकर चलता है, फिर भी वह उन दोनों से अलग है। यात्रावृत्त का लेखक यात्रा के विवरणों में स्थान, दृश्य, घटना तथा व्यक्ति आदि से संबंधित कटु और मधुर स्मृतियों का चित्रण कर सकता है।

हिंदी में यात्रावृत्त विधा को समृद्ध करने वालों में महादेवी वर्मा, राहुल सांकृत्यायन, अज्ञेय (अरे यायावर रहेगा याद), मोहन राकेश (आखिरी चट्टान तक), भगवतशरण उपाध्याय (वो दुनिया), यशपाल (स्वर्गोद्यान बिना साँप) आदि प्रमुख हैं।

ck/k iz'u

9. यात्रावृत्तांत किस विधा के सबसे नजदीक है?
   क) कहानी
   ख) रेखाचित्र
   ग) संस्मरण
   घ) जीवनी ( )
10. इनमें से कौन सी विशेषता यात्रावृत्तांत पर लागू नहीं होती।
   क) इसमें यात्रा का वर्णन होता है।

ख) स्मृत्ति के आधार पर लिखा जाता है।
ग) यात्रा लेखक के अपने अनुभव के आधार पर लिखा जाता है
घ) यात्रावृत्तांत के लिए यात्रा करना आवश्यक नहीं है। ( )

vH;kl

4. कथात्मक साहित्य और कथेतर साहित्य में अंतर बताइए।

....

....

....

5. यात्रा वृत्तांत की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

....

....

....

33-6 Lkkjka'k

- इस इकाई में आपने कथेतर गद्य विधाओं का परिचय प्राप्त किया है। इस खंड में आप कथेतर विधाओं का अध्ययन करेंगे। कथेतर विधाएं वे विधाएं कहलाती हैं जिनमें कोई कथा नहीं होती। मसलन, कहानी, उपन्यास और नाटक किसी-न-किसी काल्पनिक कहानी पर आधारित होती हैं जबकि निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण, यात्रावृत्तांत, रिपोतार्ज, जीवनी, आत्मकथा आदि विधाएं कथेतर गद्य विधाएं हैं क्योंकि इनमें काल्पनिक कहानी नहीं होती। अगर किसी घटना या प्रसंग का उल्लेख भी होता है, तो वह वास्तविक होती है, लेखक की कल्पना नहीं होती। इस तरह इस इकाई से आप कथेतर गद्य विधा को स्पष्ट कर सकेंगे।
- इस इकाई में आपने निबंध विधा के बारे में अध्ययन किया है। निबंध कथेतर गद्य की एक महत्त्वपूर्ण विधा है। निबंध को गद्य की कसौटी कहा गया है। निबंध में लेखक अपने विचारों और भावों को अभिव्यक्ति प्रदान करता है। निबंध में लेखक के व्यक्तित्व का प्रभाव भी अभिव्यक्त होता है। निबंध को अंतर्वस्तु, शैली, भाषा आदि के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है। इस खंड में आप ललित निबंध और व्यंग्य निबंध का भी अध्ययन करेंगे। इकाई पढ़ने के बाद आप निबंध की विशेषताएं बता सकेंगे।
- इस इकाई में आपने रेखाचित्र, संस्मरण और यात्रावृत्तांत के बारे में भी अध्ययन किया है। रेखाचित्र शब्द चित्रकला से लिया गया है। यह ऐसी गद्य विधा है जिसमें लेखक शब्दों के माध्यम से किसी व्यक्ति, स्थिति और प्रसंग का रेखाचित्र निर्मित करता है। रेखाचित्र में लेखक विस्तार से और विश्लेषण से प्रायः बचता है। रेखाचित्र अतीत, वर्तमान और भविष्य से संबंधित हो सकता है। आप इस इकाई के आधार पर रेखाचित्र की विशेषताओं का उल्लेख कर सकते हैं।
- संस्मरण भी कथेतर गद्य विधा है। यह अतीत की स्मृतियों के आधार पर लिखा जाता है। संस्मरण में लेखक के अनुभव अभिव्यक्त होते हैं। संस्मरण किसी के भी बारे में हो सकते हैं। इस इकाई के आधार पर आप संस्मरण की विशेषताएं भी बता सकते हैं।
- यात्रावृत्तांत भी एक लोकप्रिय गद्य विधा है। इसमें लेखक अपनी यात्राओं का वर्णन प्रस्तुत करता है। लेखक जिस किसी स्थान की यात्रा करता है, उसका वर्णन प्रस्तुत करता है। वह सिर्फ जगह का विवरण प्रस्तुत नहीं करता बल्कि उस स्थान के ऐतिहासिक महत्त्व, उसके सौंदर्य और उससे जुड़े विभिन्न तथ्यों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है। आप यात्रावृत्तांत की विधागत विशिष्टताओं का भी उल्लेख कर सकते हैं।

33-7 'kCnkoyh

ijkdk"Bk % काष्ठा का अर्थ है, सीमा और पराकाष्ठा का अर्थ है, चरम सीमा या हद।
0;fDrRo % व्यक्ति में निहित वे विशेषताएं जिनसे उसकी पहचान बनती है।
pgqe[kh % चारों ओर या चारों दिशाओं में।
ftnkfnyh % जिंदा दिल होना या खुश मिज़ाज प्रकृति का व्यक्ति।
vfHk0;atuk % अभिव्यक्ति, प्रकट करना।
vrfufgr % में स्थित या किसी वस्तु, विचार या भाव में निहित।

Hkkso;k=k % भावनाओं का सिलसिला।
U;wure % कम से कम।
mikn;rk % उपयोगिता।
o.;Z-fo"k; % वह विषय जिसका वर्णन किया जाना हो।

33-8 ck/k i'uksa@vH;klksa dk mÙkj

ck/k i'u

1. ख)
2. क) आत्मपरक निबंध
   ख) विश्लेषणात्मक निबंध
   ग) समास शैली
   घ) ललित निबंध
   ड़) भावनात्मक निबंध
3. क) चिंतन प्रधान निबंध
   भाव प्रधान निबंध
   ख) आत्मपरक निबंध
   वस्तुपरक निबंध
   ग) व्यास शैली
   समास शैली
4. i) कथ्य में अंतर्निहित सौंदर्य को उभारना।
   ii) मर्मस्पर्शी कथ्य।
5. समास शैली में लेखक के विचार एक के बाद एक प्रस्तुत होते रहते हैं, उनमें व्याख्या नहीं होती। इस शैली में लेखक अपने विचारों को विस्तार नहीं देता बल्कि उन्हें संक्षेप में और सूत्र रूप में प्रस्तुत करता है। इसके विपरीत व्यास शैली में लेखक अपने विचारों को खोलकर रखता चलता है। अपना मत व्यक्त करते हुए उसकी व्याख्या भी करता चलता है।
6. कथ्य के आधार पर
   लेखकीय विशिष्टता के आधार पर
7. ग 8) घ 9) ग 10) घ

vH;kl

1. इस इकाई का भाग 33.2 पढ़िए और उत्तर स्वयं लिखिए।
2. रेखाचित्र अतीत, वर्तमान और भविष्य पर भी लिखा जा सकता है जबकि संस्मरण सदैव अतीत पर आधारित होता है।
   रेखाचित्र में लेखक कम से कम शब्दों का प्रयोग करते हुए सुगठित रूप में शब्द चित्र निर्मित करता है जबकि संस्मरण में ऐसी कोई बंदिश नहीं होती।
3. निबंध को गद्य की कसौटी इसलिए कहा जाता है क्योंकि किसी लेखक का भाषा पर कितना और कैसा अधिकार है, इसका पता निबंध से ही लगता है। निबंध में लेखक को अपने भावों ओर विचारों को बहुत ही संयमित और सुगठित रूप में प्रस्तुत करना होता है। उसे विचार स्पष्ट, सुबोधगम्य और विवेकपूर्ण ढंग से रखने चाहिए। भावों की अभिव्यक्ति में उसे संयम की जरूरत होती है। जो कुछ वह कहना चाहता है उसे प्रभावशाली ढंग से कहना चाहिए। जहां लालित्य लाने की जरूरत हो, या व्यंग्य लाने की, उसमें भाषा के वैसे इस्तेमाल की क्षमता होनी चाहिए।
4. कथात्मक साहित्य और कथेतर साहित्य में मुख्य अंतर कथा का ही होता है। कथात्मक साहित्य में कोई काल्पनिक कहानी अवश्य होती है। वह काल्पनिक कहानी यथार्थ पर आधारित हो सकती है। लेकिन कथेतर साहित्य के केंद्र में कथा का होना आवश्यक नहीं है। यदि वह कोई प्रसंग या घटना का इस्तेमाल करता है, तो वह काल्पनिक न हो। जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, रेखाचित्र, यात्रावृत्तांत, रिपोतार्ज आदि कथेतर गद्य विधाओं में घटनाओं और प्रसंगों का उल्लेख हो सकता है। यहां तक कि निबंध में भी ऐसा संभव है। लेकिन कथात्मक विधाओं यानी कहानी, उपन्यास और नाटक विधाओं में कथा का होना अनिवार्य है।
5. इस इकाई के भाग 33.5 को पढ़कर उत्तर स्वयं अपने शब्दों में लिखिए।